मौत का पहाड़
शब्द : गायत्री मदन दत्त
चित्र : राम वाईरकर
इचिरो और चिरो दो भाई थे. दिन-भर वे अपने खेतों में काम करते थे.
शाम को जब वे घर लौटते, उनकी मां सुमी मुस्कराते हुए उनका स्वागत करती थी.
आओ, मेरे बेटो, भोजन तैयार है.
पर कुछ दिनों से इचिरो और चिरो उदास रहने लगे थे...
...और वे अक्सर खिड़की में से, दूर, कुहरे से घिरे पहाड़ की ओर देखा करते थे.
70 वर्ष के होते ही सब बूढ़ों को उनके बेटे इसी पहाड़ पर ला कर छोड़ जाया करते थे.
यह नियम उस राज्य के राजा ने बनाया था. इसके पीछे विचार यह था कि जब बूढ़ों में योग्यता और ताकत खतम हो जाती है, वे परिवार और समाज पर बोझ बन जाते हैं.
इस नियम में यह बात भुला दी गयी थी कि बूढ़े लोग अपना वर्षों का अनुभव और ज्ञान अपने बच्चों को दे सकते हैं.
और एक शाम, सुमी ने अपने बेटों से कहा –
मेरे बच्चो, आज पूर्णमासी है. आज मैं 70 वर्ष की हो गयी. अब इस राज्य के नियम के अनुसार...
...कल तुम मुझे उस पहाड़ पर पहुंचा आओ, जहां से कोई लौट कर नहीं आता.

© NCERT not to be republished

अंधेरा हो चला था और बर्फ भी गिरने लगी थी. उतावली में, भाइयों ने छोटे रास्ते से नीचे उतरने का फैसला किया.
अचानक, बर्फ के फाहे घने होने लगे और जोरदार तूफान शुरू हो गया.
अब कैसे जाएं ? हम कहां हैं ?
इचिरो, हम रास्ता भटक गये हैं! आगे कोई रास्ता नहीं है.
और निराश हो कर वे वापस पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ पड़े.
मां, तुम कहां हो ?
हम रास्ता भटक गये हैं, कहां हो ?
बर्फ से सुन्न होकर, अधमरी-सी सुमी झाड़ियों के पीछे पड़ी थी. पर उसमें चेतना आयी...
...बच्चों को मेरी जरूरत है.
इचिरो और चिरो ने उसे डोली में बैठाया और घर ले चले
वे देखो, टूटे हुए सरकंडे पड़े हैं न ? उसी रास्ते चलो, मेरे बच्चो.
बड़ी आसानी से और आत्म-विश्वास के साथ सुमी उन्हें पहाड़ से नीचे ले आयी...
...और उनका घर आ गया.
हम तुम्हें कभी नहीं जाने देंगे, मां !
चाहे हमें कुछ भी क्यों न सहना पड़े
इचिरो और चिरो ने सुमी को झोपड़ी के पिछले हिस्से में छिपा दिया, ताकि गांववालों और सिपाहियों को उसका पता न चले.
वे तीनों बड़े आनंद से रहने लगे.

© NCERT not to be republished

सुमी के पास इस समस्या का भी हल था. बोली – पहला कदम है एक चींटी को पकड़ना...
...उसके पैर में धागा बांध कर उसे शंख के ऊपरवाले छेद में से अंदर जाने दो.
फिर शंख के मुंह पर कुछ चावल के दाने रखो.
चावल के दानों से आकर्षित हो कर चींटी शंख में से अपना रास्ता बना कर निकलेगी तो धागा भी शंख के मुंह तक पहुंच जायेगा.
और राजा की खुशी की सीमा न रही!
दूसरे गांववालों को दुबारा जुर्माना भरना पड़ा.
तीसरा काम था, बांस के टुकड़े में जड़ और तने की ओर के सिरों को पहचानना. सुमी के उत्तर को दरबार में प्रयोग करके दिखाया गया.
बांस के टुकड़े को पानी में डालिए. जो सिरा तैरे वह तने की ओर का है, और जो डूबे वह जड़ की ओर का.
लाजवाब! मेरे बच्चो, इस बार भी तुमने काम कर दिखाया.
एक ऐसा ढोल लाओ, जो बिना बजाए बजता हो.
राजा का बताया यह काम भी बच्चों ने घर जा कर सुमी को बताया. कुछ देर सोचने के बाद सुमी हंसने लगी.
अचार के इस डिब्बे का ढक्कन और पेंदा हटाने से वह दोनों ओर से खुल जायेगा.

अब चमड़े के गोल टुकड़े काट कर इसके दोनों ओर मढ़ दो. मगर उससे पहले...
... कुछ मधुमक्खियां अंदर छोड़ दो.
जब राजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल को हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियां घबरा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे...
ढुप्प
ढुप्प
ढुप्प
... ढोल अपने आप बजने लगा.
चमत्कार! चमत्कार! मेरे बताये सभी काम पूरे करने के उपलक्ष्य में, ऐ लड़को, मैं तुम्हें उगते हुए सूर्य का पदक प्रदान करता हूं.
महाराज, रुकिए. हम एक अपराध स्वीकार करना चाहते हैं.
इस सम्मान के हकदार हम नहीं, बल्कि हमारी मां हैं, जिन्हें हमने अपनी झोपड़ी के पीछे छिपा रखा है.
हालांकि वे 70 वर्ष की हो चुकी हैं, पर हमने उन्हें नहीं जाने दिया है. इस तरह हमने राज्य का नियम तोड़ा है.
क्या! तुमने नियम तोड़ा है? तब तो तुम्हें वही दिया जायेगा, जिसके तुम लायक हो...

..तुम्हें क्षमादान दिया जाता है! हा हा हा!
इचिरो और चिरो, आज मुझे बहुत बड़ी सीख मिली है. मैं अपने बनाये उस निर्दय नियम को रद्द करता हूं.
महाराज, कृपा करके इन गांववालों के दिये हुए जुर्माने को वापस लौटा दीजिए. क्योंकि ये बेचारे तो गरीब से गरीबतर हो गये हैं.
में न सिर्फ इनके रुपये लौटाऊंगा, बल्कि एक कोष स्थापित करूंगा, जिसकी सहायता से ये अपने बूढ़े मां-बाप की अच्छी तरह से परवरिश कर सकें.
और जल्दी ही, दरबार में –
सुमी, तुम्हारी सूझबूझ और समझदारी के लिए और जो ममता तुमने अपने बच्चों को दी है, उसके लिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं.
अब से तुम और तुम्हारे ये लड़के मेरे शाही सलाहकार होंगे
और उस दिन से मौत का पहाड़ सूना पड़ा है...
...क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहां छोड़ने नहीं आना पड़ता.